Dr. DHANVIR PRASAD
ASSISTANT PROFESSOR (G. T)
DEPT.OF.PSYCHOLOGY
C.M.J COLLEGE DONWARIHAT(KHUTONA)MADHUBANI
L.N.M.U DARBHANGA

PSYCHOLOGICAL THEORY OF DREAM

स्वप्न का मनोवैज्ञानिक सिद्धांत अलौकिक एवं शारीरिक सिद्धांतों का खंडन करता है। इसके अनुसार स्वप्न न तो दैविक प्रकोप या आत्मा के भ्रमण के कारण होता है और न ही निद्रावस्था में उद्दीपनों के प्रभाव के फलस्वरूप ही। यह सिद्धांत स्वप्न का संबंध व्यक्ति को मानसिक अनुभूतियों से स्थापित करता है। इस सिद्धांत के जन्मदाता महान मनोवैज्ञानिक सिगमण्ड फ्रायड हैं। इन्होंने 1900 ई में अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'स्वप्न विश्लेषण ' में स्वप्न की विशद मनोवैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत की है। फ्रायड की मनोवैज्ञानिक व्याख्या ने न केवल स्वप्न से संबंधित प्राचीन अंधविश्वास को समाप्त किया बल्कि स्वप्न का वैज्ञानिक आधार प्रस्तुत किया।

कुछ दिनों के पश्चात् एडलर एवं युंग ने , जो कि प्रारम्भ में फ्रायड के सहयोगी थे , फ्रायड की विचारधारा की आलोचना की और अपनी अलग विचारधारा प्रस्तुत की। अतः स्वप्न के मनोवैज्ञानिक सिद्धांत के अन्तर्गत हम फ्रायड, एडलर एवं युंग के सिद्धांतों का अलग-अलग उल्लेख करेंगे ।

फ्रायड का स्वप्न-सिद्धांत :-

फ्रायड ने अपनी पुस्तक 'स्वप्न-विश्लेषण 'में स्वप्न का वैज्ञानिक आधार प्रस्तुत किया है उनके सिद्धांत को इच्छापूर्ति का सिद्धांत कहा जाता है। फ्रायड के अनुसार स्वप्न निरर्थक तथा निरुद्देश्य नहीं होते हैं बल्कि सार्थक एवं सोददेश्य होते हैं। स्वप्न के माध्यम से व्यक्ति की अचेतन इच्छाओं की तृप्ति होती है। अचेतन मन का वह पहलू है जहाँ पर अनैतिक, असामाजिक एवं अतार्किक इच्छाएँ तिरस्कृत होकर दमित हो जाती है। फ्रायड के अनुसार-

Dream is the unconscious mental process of sleeping state by which our unconscious desires and wishes are expressed and fulfilled in a disguised form. “

अर्थात, स्वप्न निद्रावस्था की वह अचेतन मानसिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा हमारे अचेतन मन की अभिलाषाओं की अभिव्यक्ति एवं संतुष्टि छद्म रूप में होती है। फ्रायड ने बतलाया कि अचेतन की इच्छाएँ अपने मौलिक रूप में स्वप्न में प्रगट नहीं होती हैं। क्योंकि निद्रावस्था में भी स्वप्न प्रतिबन्धक बिल्कुल शांत नहीं रहता है। बल्कि यह शिथिल हो जाता है और इसका नियंत्रण ढीला हो जाता है। फ्रायड ने बतलाया कि कि अचेतन में दमित इच्छायें अनैतिक, असामाजिक तथा अतार्किक होती है। फ्रायड के शब्दों में “स्वप्न व्यक्ति की दमित कामुक-इच्छाओं की छद्म अभिव्यक्ति है।

फ्रायड के पूर्व दार्शनिकों एवं विद्वानों ने स्वप्न की व्याख्या अलौकिक तथा शारीरिक सिद्धांतों के आधार पर की थी। फ्रायड ने अपनी पुस्तक स्वप्न-विश्लेषण में स्वप्न के इच्छापूर्ति सिद्धांत का प्रतिपादन कर पूर्व के

मतों का खंडन किया । फ्रायड कायह सिद्धांत मनोविज्ञान तथा मनोचिकित्सा के लिए अपूर्व देन है ।

फ्रायड के स्वप्न सिद्धांत की सबसे कटु आलोचना उनके काम सम्बन्धी धारणा को लेकर की गयी है। उनके अनुसार सभी स्वप्नों से अचेतन में दमित काम इच्छा की संतुष्टि होती है। अतः फ्रायड का स्वप्न में काम सम्बन्धी विचार अतिशयोक्ति से पीड़ित है।

फ्रायड का स्वप्न सिद्धांत गत अनुभवों पर आधारित है। इन्होंने स्वप्न का कारण अचेतन में दमित पूर्व अनुभवों से बतलाया है। ऐसे अनेक स्वप्न के उदाहरण उपलब्ध हैं जिनसे भविष्य की धटनाओं का आभास प्राप्त हुआ है ।

।आलोचकों का कहना है कि फ्रायड का स्वप्न सिद्धांत असामान्य स्वप्नों पर आधारित है। इसलिए मैकडुगल ने कहा है कि फ्रायड का स्वप्न सिद्धांत स्नायुरोगियों के स्वप्न के लिए सत्य हो सकता है परन्तु प्रत्येक स्वप्न को समझने के लिए यह सिद्धांत सक्षम नहीं है ।

उपर्युक्त आलोचनाओं के आधार पर यह समझना भूल है कि फ्रायड का स्वप्न सिद्धांत निराधार है। फ्रायड ने अपने सिद्धांत से मनोविज्ञान में स्वप्न की कुछ ऐसी अभूतपूर्व धारणाएँ स्थापित की है जो अपने आप में सर्वोपरि है ।